____ **जवाहर सिंह**

गांव के मुरदा

दरवाजा का आगे सहन में नीम के छितनार गाछ बा। बाबूजी ओकरे छाया में झिंगली बंस खटिया पर दूनों पेर नीचे लटकवले आ ठेहुना पर दूनों केहुनी टिका के तरहथी पर गाल घडले सिर लटका के बइठल रहलन। कुछ दूरे से देखलीं, अनचिन्हार नियर लगले। तरहथी पर ओठगाँवल एगो अपरिचित अनजान चेहरा!

जइसे-जइसे दूरी कम होत गइल अपरिचय के भाव भी साँप का गेरुई नियर भीतरे-भीतरे गुटिआये लागल। हमार आँख बरगद का सूखल बरोह नियर उनकरा सूखल झुरिआइल टंगरियन पर टिक गइल। उनकर दूनों टाँग सूख के कइसन मुअतार खानी हो गइल बा! हाथ के अटैची नीचे रख के उनकर गोड़ छुए खातिर निहुरली तऽ गोड़ पर से नजर अपने आप हट गइल। ऊ चिहुँक के सिर उपर उठवलन। चौधिआइल धंसल उनकर बूढ़ आँख बहुत देर ले हमरा चेहरा आ देह पर पहचान के जमीन खोजे खातिर साँप का फाटल जीभ नियर लपलपात रह गइल। झुरिआइल सूखल हाथ थोड़ा काँप के आगे बढ़ल लागल जइसे उनकरा भीतर के पिता अपना बेटा के छू के कवनों भुलाइल दुलार के छ्न के हथेली में समेट लेबे के चाहत बा। कवनों बिसवास के अपना मुट्ठी में बंद कर लेबे खातिर छटपटाइल बा। हम तनी निहुर जातानी, उनकरा हाथ के सुतल दुलार के छुअन के अपना पीठ पर फेनू से भोग लेबे का लालच में। उनकर हाथ हमरा पीठ तक नइखे पहुँचत, बाकिर उनकर दुलार बोएल हाथ के छुअन के फुरफुरी हम अपना पीठ पर अनुभव करे लागत बानी....साइत माई बाबू के दुलार में जरुर अइसन कवनों जादू रहे ला जवन घटा में नुकाइल सूरज नियर अपना गरमी से तनमन में झुरझुरी पैदा करके सिहरा देला। ......

पातर मोहरी के पाइन्ट के कारन हम एहले अधिका भुक नइखीं सकत आ बाबूजी के असमर्थ काँपत हाथ हमरा पीठ तक पहुँच नइखे सकत। हम देखतानी हवा में झूलत एगो झुरिआइल असमर्थ काँपत हथेली। हम उनकर झिरकुटिआइल हाथ, सूखल बरोह नियर टाँग आ भावशून्य निरजीव मुअतार चेहरा के कुछ देर ले टुकुर-टुकुर ताकते रह जातानी आ हमरा भीतर से रोआई आवे-आवे होखे लागता।

'चीठी हमरा बहुत देर से मिलल ...... कौलेज का लड़िकन के ले के घुमावे चल गइल रहनी हँ........उहाँ से लौटलीं त भइया के चिट्ठी मिलल कि माई मर ......।' हमार कंठ रुधा जाता आ आगे कुछ बोल नइखीं सकत।

www.bhojpurisahityangan.com

बात शुरु करे खातिर कवनों राह ना मिलल तऽ हम घबरा के अपने मने माई का मुअला में ना अइला के सफाई देबे लागत बानीं। जानत बानी, ई बात पाछहूँ कहल जा सकत रहल। लेकिन बाबूजी के पथराइल आँख आ गुम-सुम चेहरा के देख के हम अतना डेरा घबरा जातानी कि दोसर कवनों बात चलाने के उकिते नइखे खुलत। बुझाता बाबूजी का हमरा एह सफाई ओफाई से कवनों मतलब नइखे .... उनकरा खातिर ई सब बेकार आ बेमतलब बा। अब साइत उनकरा हमरा घरे अइला आ ना अइला के कवनों विसेस अरथ नइखे रह गइल। उनकर भावहीन सपाट चेहरा देख के हमरा अइसने लागता। हम आउरो घबरा जातानी। उमेद रहे हमार बात सुनके उ कुछ बोलिहें ..... कहिहें ..... पूछिहें ऊ त अब हमरा ओर देखते नइखन। उनकर आँख कहीं दूर टिकल बा .... साइत सामने का दरबाजा पर..... साइत कहीं शून्य अकास में। हमरा कुछ पता नइखे चलत। गजब के थकावट निरासा आ पीड़ा छलछलाता। उनकरा चौधिआइल-धंसल आंखन में, दुनियाँ जहान से उदासीन --- अपना-पराया से बेगानापन .... कुछ ना के भाव....शून्य .....।

“...... माई का का भाइल रहे?" साहस बटोर के पूछ तानीं। ऊ टुकुर-टुकुर हमरा ओर देखत रह जातारन। उनकर बुझल मुरझाइल दृष्टि। खूब लमहर एगो साँस खींच के सिर नीचे झुला लेत बाड़न। जमीन पर टेढ़-मेढ़ कइगो रेखा खींचत बारन आ दोसर रेखा से काट देत बाड़न।

हमार मन खिजाए लागता। अपना ओर से हम केतनों कोसिस करीं उनकरा जब कुछ बोलहीं के नइखें तब .....।

कुछ देर चुप-चाप खड़ा रहत बानी। ... साइत बाबूजी हमरा पर नाराज बाड़न, मन में सोचत बानी। माई का मुअला का समय हमार घरे ना आइल साइत बाबूजी के कहीं बहुत भीतर छू गइल बा। ...... इनकरा के कइसे विसवास दिलाई कि ठीक समय पर हमरा खबर ना मिल सकल। लेकिन भइया चहते तऽ हमरा के तार देके भी बोला सकत रहले।

हम कालेज के लड़िकन के लेके 'एक्सकर्शन पर बम्बई गइली ओकरा दिन पहिलहीं माई मर गइल रहे। भइया माई के बेमारी या मुअला का बारे मे हमरा के तार से खबर ना देके ओकरा गुजर गइला का दू दिन बाद एगो साधारण पोस्टकार्ड लिख के बात जनवले, एकर कुछ मतलब हमरा ना समझ में आइल कि अइसे ऊ काहे कइले ।

ओहीजा खड़े-खड़े हम सब बात सोचतानी। बाबूजी अबहूँ हमरा ओर ना देख के सून आकास में एक टक देख रहल बाड़न। साइत माई के मुअल बाबूजी के बहुत भीतर से हिला देले बा ..... टूट गइल बाड़न। एतना बृढ़ तऽ ई हमरा कबहीं ना लागत रहले हऽ। ओह घड़ी दशहरा का छुट्टी में आइल रही तऽ कइसन बिहंस-बिहंस के बोलत रहलन - “तोर इहाँ मन ना लागे, ई हम खूब बूझेलीं ...... दू चार दिन भी घरे ना रहे के चाहस सहर में भागे खातिर हालन

www.bhojpurisahityangan.com

पगहा तुरावत रहे ले ...... एह साल लगन में जरुर तोहर बिबाह कर देब .... बिना नाथ के तें छुट्टा साँढ़ नियर घुमते रहबे।" तब अपने मने हमरा ओठ पर अठनिया मुस्की आ गइल रहे। तब बाबूजी वेतना खुश भइल रहले। घरे से चले लगलीं तऽ घर गिरहथी के बतकहीं तऽ करते करते पीच सड़क ले हमरा के पहुँचावे चल आइल रहले। बाकिर चारे महीना में केतना बदलल नजर आवत बाड़न .... बुझाता तन से ना मन से भी टूट गइल बाड़न।

उनकरा लगे अब आउर देर ले ठाढ़ ना रहल जा सकता। जब हमरा से उनका कुछ बोलहीं बतिआबे के नइखे तब कुछ कहल पूछल बेकारे बा। अटैची उठाके दरवाजा का ओर बढ़े के होअतानी कि पैर अपने आप थम थमात जाता। एकबार फिर बाबूजी का भावहीन मुअतार चेहरा पर नजर जाके अँटक जाता ।

"तहार तबीअत ठीक नइखे का बाबूजी ?"

सिर उठाके ऊ हमरा ओर देखे लागताड़न जइसे पहिचान आ अपना मन के ऊ तागा जे अनजाने में कहीं टूट गइल बा ओकरा के फेनू से जोड़े के कोसिस कर रहल बाड़न।

'ठी...ई...ई...के बा .... तबीअत .... हो ।'

भीतर से बलबस्ती खींच के निकालल दू टुम बात ..... उत्तर। एक पल ठहर के एतना जोड़ देत बाड़न - "हमरा तबियत का अब का होई, ना मूअब, ना जीअब ..... जे भोगल लिखल बा से भोगही के पड़ी।"

झिंगली खटिया का पाटी पर हाथ रोप के ऊ धीरे से ओठंगल जात बाड़े। गते-गते आँख बन्द हो जाता आकि झुरी के कारन हमरा बन्द होखला अस लागता, ठीक-ठीक समझ नइखीं पावत। कुछ देर ले खड़ा उनकरा मुँह एक टक देखत रह जात बानीं। मन में ना जाने कइसन-कइसन दो होखे लागत बा। दरवाजा के चउखट लाँघ के दूमुहाँ में डेग रखते ठिठक के खड़ा हो जात बानी; जेइसे ठकुआ मार देले होखे।... केतना सूनसान आ भकसावन लागत बा ई, दूमुहाँ वाला कमरा, जइसे इहाँ कवनों झमाठ पेड़ रहे आ अब कटा गइल होखे .... कवनों बड़हन मूरत होखे आ अब इहां से हटा लेहल गइल होखे। गोबर आ पीअरी माटी से मिलल जुलल एगो

गजब किसिम के महक नाक में भर जाता। साइत कुछ देर पहिले कमरा लिपाइल रहलऽ।

आँख एक खास जगहा पर जाके ठहर जाता...इहाँ माई के खटिया विछावल रहत रहल। ओह कोना में ओकर पुरनका काठ वाला बाकस धइल रहत रहल, जवना पर माई आपन नरियर चीलम आ तमाकू वाली पउती रखत रहे। अब इहाँ कुछुओ नइखे, माई, ना ओकर खटिया ना काठ के सनूख पर देवाल से ओटंगावल ओकर नरियर चीलम। छव सात साल पहिले से एह कमरा में माई का साथे-साथे ओकर सब चिझन के ठीक-ठीक ओही जगे पर देखे के अइसन

www.bhojpurisahityangan.com

आँख पइट गइल बा कि आज उ सबके ना रहला के भाव ओकनी का रहला के भाव से अधिका तेजी से मन के झकझोर देलख।

भइया के बिआह के बाद माई एही दूमूहों में रहे लागल रहे। गवना में मिलल आपन काठ के सखून आ टिनही पेटी भी भीतर वाला कमरा में से उठा के एही दुमूहाँ में ले आइल रहे। भीतर वाला घर में कनिया भौजी के पटिहाट बिछा देहल गइल। तब से माई एही दुमूहाँ में रहे लागल। कभी-कभी ऊ आपन झाँपी पेटी खोल के बिअहुती लाल सारी सोहाग के लाल सिन्होरा आ पुराना चलाना के सोना चानी के गहना निकाले तऽ हम देखे खातिर ओही जा घुरिआइल रहीं। ना जाने केतना खानी विखानी के चीज ओकरा सनूख में से निकलल रहे - लाल हरियर रंग के पउती, ममती. फुदेना, तकिया के खोल जवना पर हाथी घोड़ा के छापा उतारल........।

बहुत दिन पहिले के एगो बात इयाद आवत बा। साइत टोल्ला मोहल्ला में केहू के बेटी के बिआह रहे। फूलेना काका के रमझरिया के। कादो माई आपन बिअहुती सारी आ सब गहना गुड़िया पेन्ह के आँगन में खाड़ रहे। हम पाठशाला से बगल में बस्ता जँतले अइली तऽ दरबाजा पर से आंगन में माई के लाल पीयर कपड़ा में देख के चिन्हबे ना कइलीं। हमरा बुझायल कि सीतवा के भौजी होइहें, खिड़की का राहे नुकाके कुछ मांगे खातिर आइल होइहें। हम 'माई-माई' कहत रसोइघर में ओके खोजे चल गइलीं। त ले माई आँगन में हँसत निहाल भइल रहे ।

" काहे हो भोला के माई, का बात हऽ कि अकसरुए हँसत-हँसत लोटन कबूतर बनल बाड़ू? " बाबूजी दुआरी पर से बोललन।

“हुई देखीं ना, ई पगला गनेसवा लाल सारी पेन्हला पर हमरा के चिन्हते नइखे ......हम आँगन में खाड़ बानी आ ई हमरा के चुल्हानी में खोजे गइल बा।....... का हम ई सारी पेन्ह के अतना बदल जाइले?"

पता ना बाबूजी कवन दो अइसन बात कहलन कि माई एकदम लजा गइल आ मुसकिया के धीरे से कहलख - "हटी ओने... रउआ तऽ हरदम उहे रहेला ....चोरवा के मन बसे ककड़ी का खेत में.....।"

बाबूजी हँसते-हँसते फेर बाहर चल गइले।

साँचो ऊ सारी आ गहना गुड़िया पेन्ह के माई केतना बदल जात रहे! ओह घड़ी के केतना-केतना बात आज इयाद आ रहल बा, एक के बाद एक, जइसे केला का पत्ता आ ओकरे में से पत्ता निकलल करेला। भइया का विवाह का बेरा माई आपन झाँपी खोलके सब गहना गुड़िया आ घराऊ लूगा झूला निकाल के आँगन में छितरा देले रहे। हम ओकर एक-एक गहना आ लाल पीयर सारी हाथ से छू-छू के धेयान से देखे लागल रहीं।

www.bhojpurisahityangan.com

"गनेस अपन दुलहिन खातिर चुन ले, जवन जवन तोरा पसन्द होखे, माई कनखी से हमरा ओर देख के मुसका के कहलस, ई सब असली सोना के गहना ह खाँटी माल अबका जमाना में अइसन चीझ कहाँ मिली।

लडिकाई का दिन के केतना सब घटना आ बात एक दोसरा के घकिया के आगे आबे खातिर भीतरे हुमचे लागल बाड़न स। माई के अलग-अलग रूप खिड़की का मुहे झांके लागत बा, मन का झांरोका से लउके लागत बा। हमरा बुझाता ई दुमूहाँ सून सान होके भी भरल बा। ... माई के इयाद एकरा देवालन में आँख बन के हमरा ओर निहार रहल बा.... दुलार रहल बा।

भउजी ना जाने कब से आ के हमरा बगल में ठाढ़ हो के एक टक हमरा के निहार रहल बाड़ी। साइत हमरा के माई का इयाद में भुलाइल देख के चुपचाप ठाढ़ हो गइल होइहन। आगे बढ़ के ऊ हमरा हाथ से अटैची लेबे लागत बाड़ी ता हम चिहा के उनकरा ओर ताके लागन बानी ऊ कुछ बोलत नइखी हमरा हाथ में से अटैची लेके चुपचाप आँगन का ओर बढ़े लागत बाड़ी। हमार हाथ प्रणाम खातिर उठल रह जाता ।

“ प्रणाम....... "

भउजी वाला सम्बोधन ना जाने काहे हमरा मुँह से ना निकल सकल। 'खुश रहीं।' प्लास्टिक का गुड़िया नियर उनकर ओठ खुलता आ बन्द हो जाता। ना इचको हंसी ना मुसकान ... ना चेहरा पर कवनों हरस विखाद - बस भावहीन सपाट चेहरा प्लास्टिक के मूरत के चेहरा...।

हमरा घरे अइला पर इहे भउजी पहिले केतना खुश होत रहली ह ....मने में सोचत बानी। हरदम इनकरा चेहरा पर दूध का फेन नियर हँसी उतराइल रहत रहल..... आंगन में डेग घरते कवनो अइसन हंसी मजाक के अजगुत बात कह दिहें कि बहुत देर ले मन में भीतरे - भीतरे

गुदगुदी उठत रह जाई। अपना हाथ से हमार पैताबा खोलके छीपा में पानी लेके हमार गोड़ धोवे खातिर बइठ जईहें। हम कतनों ना-ना करत रहब बाकिर का मजाल कि बिना धोअले छोड़स।

भइया का बिआह का बाद डेढ़ साल पर छुट्टी में घरे आइल रहली तऽ बहुत देर ले भउजी हमरा सोझे ना भइल आ कोठरी का मीतरे से कुसल-क्षेम पूछत रहे। तब हम अनखा के कहले रहीं, 'का हो भउजी, अब का चनरमा घाटा का ओटे में छिपल रह जइहें..... चकोर तरसते रह जाई?"

“चनरमा में कलंक जे लाग गइल बा, बबुआ जी कइसे मुँह देखाओ... ।” भउजी के अइसन बोली सुन के हम सांचहूं कवनो कलंक के बात सोचके भीटर- भीतरे सिहर गइल रहीं। तब माई बतवले रहे, "दुलहिन दिन चढ़ गइल बा. ओही से तोहरा सामने आबे में लजात बाड़ी।"

www.bhojpurisahityangan.com

ओह दिन भउजी के खोद-खोद के दिनभर कउँचावते रह गइल रहीं आ ऊ एह घर ओह् घर भागल फिरस।

“मुँह-हाथ धोई तले हम जलखई बनादेत बानी।" भउजी रसोई घर का दरबाजा पर से बोलत बाडी ।

मन करता, जलखई बनावे के मना कर दीं, लेकिन कुछ बोलत नइखीं। पता ना काहें घर में चारो ओर हमरा एगो गजब ढ़ंग के उदासी आ मनहुसी फइलल बुझाता ... 'कुछ बेगानापन ... दुराव .... अलगाव।

एगो माई का ना रहला से ही घर के सब कुछ का अतना बदल गइल। आऊर सब लोग त बड़ले बा - भइया, भउजी, बाबूजी, दीपक ..... सभे त बड़ले बा। तब ई घर काहे हमरा एतना बीरान आ अनचिन्हार नियर लागत बा। हम सोचत बानी आ आँगन का बीच में तुलसी चौरा पर हमरा नजर टिकल रहता। एकरा पहिले छुट्टी में आइल रहीं तऽ माई एही तुलसी चौरा तर बइठ के कहत रहे- 'बेटा अब बिआह कर ले, हमार अब कवनों ठीक नइखे .... पाकल आम बानी, कबहूँ टपक जाइब ... तोहार कनिया के देखे के साध रह गइल बा।

..... तोहरा कनिया खातिर सब गहना बनवा लेले बानी ..... सब असली सोना के ... "मंगटीका, हंसुली, मोटरमाला, पहुँची, झुमका लागल कनफूल आ निथिआ, चाँदी अब के पेन्हता, खाली झांझ आ डरकस बनवा देले बानी।

तनी देर बाद एने ओने झाँक के माई हमरा आउर नियरा घुसुक आइल रहे. आ फुसफुसा के बोलस रहे - बड़कू हमरा से मुंह फूलवले रहताड़े कि माई आपन सब गहना नुका के छोटकी पतोह खातिर रख देले रहल आ हमरा मेहरारु के झूठ-मूठ के दूचार थान दे देलस।

तोहार भउजाइयो हमरा पर बेइमानी के उछरंग लगा के टिहुकल रहेली. 'बाकिर हमरा खातिर त दूनो जाना आँख के पुतरी बाड़. हम काहे दू आँख से देखीं। भगवानजी एकर न्याय करिहे ... ।

हम माई का ओर तकलीं, ओकर आंख डबडबा गइल रहे। हमारा हंसी भी आवे आ रोआई भी। हँसी आवे ओकरा सिधाई पर - एकरा खातिर आपन गहने सब कुछ बा। रोआई आवे भइया- भउजी का मन के पाप सोच के .. भला माई ओह लोग से काहे बेइमानी करी । भगवान जाने काहे लडिकाइये से भइया का मन में ई बात कइसे दो बइठ गइल बा कि माई गनेस के अधिका माने ले। एही से साइत ऊ जरिये से हमरा से पितिआउत अइसन बेहवार राखे ले ...... मने-मने जरेले। .... उनका तऽ हमार बी०ए०, एम०ए० ले पढाइयो ना सोहात रहे। बात-बात पर आरंगा लगावस आ बाबूजी रुपया भेजस तऽ मुँह फुलालेस ....। हमरा मन में लडिकाई से आज

www.bhojpurisahityangan.com

तक लेके केतना-केतना घटना आवत सिनेमा का रील नियर एक के बाद एक आवत जा रहल बा। मन में घाटा अइसन छवले जाता ..... उदास......उदास।

'हई जलखई करीं .... चाह तुरते ले आवत बानी।' छिपुली में पराठा आ अलुई-पिआज के भुजिया ले के भउजी बगल में खड़ा बाड़ी। हम उनकरा मुँह ओर देखत बानी। मुसकाये का कोरसिस में उनकर दूनों ओठ कुछ फड़कत बा बाकिर मुसकान जइसन कवनो चीझ उहाँ नइखे।

रउआ अतना उदास काहे बानी ..... 'माई जी के उमर त मरे वाला होइये गइल रहल।' एक दिन ठहर के एतना अउरी जोड़ देत बाड़ी ... "केकर मतारी-बाप हरदम साथे रहल बा लोग .... दुनियाँ जहान के इहे दस्तूर ह।"

हम भउजी का चेहरा पर नइखी देखत। उनकरा हाथ से छिपुली ले के खटिया पर रख लेत बानीं।

माईजी के प्रान रउये के इयाद करत-करत छुटल .... बार-बार राउर नाम .... "

भउजी आँख पर आँचर रख लेत बाड़ी। मुँह में लेहल पराठा के कवर जइसे हमरा नरेटी में अटक जाता। एक घोट पानी का साथ केहूं गतिया घोट जात बानी। मन करता, पूका फाड़ के एके बार रो पड़ीं। भीतर कवनो चीझ आंधी नियर घुमड़े लागता। ओकरा के दबावे खातिर हम मुड़ी नीचा करके जमीन पर झूठ-मूठ के चिचिरी खींचे लागत बानी .... चिचिरी जे एक दोसरा के कई-कई जगे काटत बाड़ी स आ कतहीं से शुरु होके कतहीं ले चल जात बाड़ी स ... बेमतलब ... फजूल ....

"भइया कहाँ गइल बाड़न?" बात बदले खातिर पूछत बानीं ।

"नहर पर खेत पाटत बा ओहोजा होइहें।" भउजी रसोईघर का ओर जात-जात कहत बाड़ी।

X X X

साँझ के बहुत देर ले नहर का बाँध पर टहलत बानी। लड़कार्ड के बहुत इयार दोस्त लोग साथ बा बाकिर ओ लोग का साथ रहके भी जइसे हम अकेला बानी... अपने आप में बन्द। हरदम हमरा इहे बुझात रहता कि ई सब लोग अनचिन्हार ह, हम भुला के कवनों दोसरा गांव में आ गइल बानीं। केहू का चेहरा पर पुरनका जान-पहचान आ हितई के अपनापन नइखे। लागता सब लोग एगो खास दूरी से हमरा के निहारत बा ..... दोसर बूझत बा। पहिले गाँव में आबत रहनी ह तऽ इहे सब साथी-संघाती गंवई प्रेम रोमांस के, रहरी-बंगा का खेतन के कइसन-कइसन खिस्सा कहानी सुनावत रहल लोग आ सहर के कौलेजियट लड़कियन के काँच-पाकल

www.bhojpurisahityangan.com

खिस्सा सुने खातिर दुआर के माटी कोर के खा जात रहल लोग। लेकिन अब तऽ जइसे सब कुछ बदलला अस लगता बेलकुल अनभावत नियर, 'परनाम भइया, ... नमसकार भाई' 'गोड़लागी काका' आ 'कब अइलह. कबले रहब' जइसे कुछ घिसल-पिटल बातन के अलाबे दोसर कुछ कहे सुने के हइये नइखे|

... का हो गइल बा ए लोग का ..... आकि हमरे में कुछ अइसन हो गइल बा .... होत जाता कि हमरा भीतर के गाँव-गाँव के रिस्ता नाता मरल जा रहल बा .....। कौलेज में पढ़त रहीं तवना घड़ी के दिन इयाद आवतारे सँ। गरमी आ दसहरा के छुट्टी होखे वाला होखे ओकरा दस दिन पहिले ही से गाँव जाए खातिर मन छटपटाये लागे .... भीतर-भीतरे मन फुलाये लागे। रेलगाड़ी में बइठला पर सैकड़न कोस दूर से अपना गाँव के खेत-पथार, बाग-बगइचा लउके लागे .... संघतिया लोग के चेहरा इयाद परे लागे आ मन करे कि कइसे उड़ के ओह लोग का लगे पहुँच जाईं .... हाथ में हाथ जोड़ा के घूमी, आपन सुख-दुख कहीं ओह लोग के सुनीं । रात का अन्हार में रेल का खिड़की से बाहर झाँकी तऽ माई, बाबूजी, भइया, आ टोला-पड़ोस के केतना लोग के चेहरा भगजोगनी नियर भक् से चमक के अन्हरिया में घुल मिल जाए। लेकिन अब तऽ कबहीं-कबहीं गाँव आबे खातिर रेल के खरीदल टिकस भी लौटा के टिसन से लौट जाइले । आखिर अइसन का हो गइल बा हमार भीतर। ...... काहे पहिले खानी अब हमरा के गाँव अपना ओर खींचत नइखे । अपना में बांधत नइखे ...गाँव खातिर पहिले खानी हमरा भीतर अब काहे नइखे गुदगुदी बरत ... सिहरत ....। कभी-कभी अकेला में निचिंत होके सोचिले - अइसन काहे होत जा रहल बा। सब रिस्ता नाता, सम्बन्ध अब पहिले नियर हमरा के काहे नइले बाँधत। गाँव के सब कुछ पहिले नियर हमरा के पूरा के पूरा काहे नइखे अपना में समेट लेत .....।

सोचत - सोचत मन में कूहा अइसन छावे लागेला। बुझाला गाँव-घर के सब रिस्ता-नाता पियार दुलार गाँव घर के मोह-ममता मुट्ठी में बन्द सूखल बालू नियर धीरे-धीरे अपने आप झरत जा रहल बा आ अबही हम एही भरम में बानी कि सब कुछ हमरा मुठिये में बन्द बा। मुठी खोल के देखे में डेरात बानी कही मुठी खाली ना निकल जाय ।

नहर का ओर से लौटत-बानी तऽ मन बडा भारी-भारी हो गइल बा गजब ढ़ंग के एगो उदासी। गाँव के चार पाँच गो नवही लोग से भेट भइल रहल। किनहूँ एम०ए० करके तीन साल से बेकार बइठल बाड़े तऽ किनहूँ बी०ए० आ बी०टी० करके इसकोल का मासटरी खातिर दउड़ल फिरत बाड़े। रामरतन काका आपन खेत बेंच के आ मेहरारु के गहना बंधिक रखके बेटा के इंजिनियरी पढ़वले, चार साल से बेकार बइठल बा जगमोहना। नोकरी मिलत नइखे। बाप रोज खोमसन देत बाड़े, घर में रोज कुकुराह आ झगड़ा ... भइया, अब त मन करता कहीं इनार-पोखरा में डूब जाईं चाहे धतूर खा के सूत रहीं ... अब सहात नइखे। जगमोहन के बात अबहियो हमरा कान में गूंजत बा। इंजिनियरिंग पास लड़का चार बरिस का बेकारी से निरास होके घतूर खा के सूत रहे के चाहत बा। का होई एह देस के ...।

www.bhojpurisahityangan.com

आजे हमरा मालूम भइलह कि हमरा बाद एह गाँव के केतना लड़का एम०ए०, बी०ए० कर लेले स। बाकिर सब के इहे सिकाइत - भइया, गांव में मन नईखे लागत। ना सिनेमा ना कलब ना सहर वाला चहल-पहल आ मस्ती .... जल्दी नोकरी मिल जाइत तऽ एह तरक से निकल जाइत आदमी। .... अब गाँव रहे लायक नइखे रह गहल। इहाँ के राजनीति आ दल बन्दी। मत पूछ भइया तू का जनब लरिकाइये से त पटना रह गइल। ... इहां के लोग बेइमानी, स्वारथ दल बन्दी, मोकदमा बाजी आ लगाबे-फंसाबे का काम में अब सहरूओ लोग ले बीस हो गइल बा।

बहुत देर ले ग्राम पंचायत के मुखिया सरपंच बलौक के बी०डी०ओ०, सी०ओ० आ असपताल के डाकदर दाई के खुलास-तमाशा के ढेर-ढेर खिस्सा कहानी सुन के मन आउरो भरिया जाता। दरबाजा पर अगल-बगल के कई गो चाचा, काका, भइया-बाबा लोग आके बइठल बा। परनाम, नमस्कार, आ कुशल छेम का बाद फेनू उहे सब खिस्सा शुरू हो जाता - बबुओ हमरा राम परकसवा के अबकी अपने साथे लियअवले जो कवनों नोकरी धरा दे ... साला गुरु टरेनिंग पास क के तीन साल से बइठल बा। का कहीं तोहरा से, कहल बा खिस्सा का आपन हारल आ मेहरी के मारल ना चूपे रहल जाला, ना कहते बनेला - ससुरा दिन भर जुरावना चमार का गद्दी में तारी पीके पटाइल रहता । सागर भइया एक ओर खटिया का ओड़चन पर

गुम-सुम मुह लटकवले बइठल बाड़े । नजर ओने जात त पूछत बानी - का हो सागर भइया, तू काहे सिरसोपता नियर चुपचाप बइठल बाड़ ... हाल चाल सब ठीक बानू? "हाल त ठीके बा बबुआ .... चाले खराब हो गइल बा।” बेमरिया नियर कोहर के बोलत बाड़े।

“का भउजी के चाल खराब हो गइल बा?” हम हँस के मजाक करत बानीं। ऊ कुछ नइखन बोलत एगो लम्बा हूँ उँ उँ..उँ कह के रह जाताड़े। हम उनकरा ओर देखत बानी बाकिर अन्हरिया में उनकर चेहरा साफ-साफ लउकत नइखे।

सब लोग कुछ देर ले एनो-ओने के बतकही क के धीरे-धीरे उठ के चल जात बा लोग। माल-गोरु नदहा पर से हटावे आ लगहरन के दूहे-बाँधे के बेरा हो गइले बा। सागर भइया अबहियो बइठले बाड़े। सब लोग का चल गइला पर उ हमरा लगे आके बइठ जात बाड़े। थोड़े देर चुप रह के गते से बोलत बाडे 'बबुआ, तहरा कोलेज का होटल-ओटल में भतबनवा के नोकरी मिल जाई? .... ढेर पढल लिखल रहतीं त दोसर कवनो नोकरी के कहती बाकिर अपर मिडिल वाला आदमी का कवन नोकरी मिली .... ना होखे त कहीं चपरासी, पिऊन के नोकरी भी दिलवा द। .... अब काम नइखे चलत ... गाँव छोड़हीं के पड़ी .... का कहीं .... ।

www.bhojpurisahityangan.com

हम चिहा के उनकरा ओर देखते रह जात बानी। गाँव का लमहर गिरहथ में सागर भइया के गिनतो होत रहल .... दूगो छोट भाई आ दूगो जवान बेटा बा लोग आ ई पचास बरिस का उमिर में भात बनाबे वाली नोकरी खोजत बाड़े .... ममिला कुछ समझ में नइखे आवत ।

हमरा बोली मे अपनापन आ परेम के गरमी पाके उनकर हिरदया पघिल के बहे लागत बा। डबडबा के कहे लागत बाड़न- "बबुआ, अइसन जबाना आ गइल बा कि आपन सहोदर भाई आ अपना बीज से जामल संतान पर भी भरोसा नइखे रह गइल। दू दू गो कुँवार जुवान बेटी के भार छाती पर बा दूनो भाई लोग आपन मेहर-बेटी के ले के कलकत्ता में मउज मस्ती करत बा लोग। एक जाना पाँच सौ कमाले आ एक जाना छौ सौ पावेले। ओही जा सूदी किस्ती चलावे ला लोग हमरा के फूटल कौड़ी ना देवे लोग। दूनो बेटा अवारा लफंगा निकल गइले सं। बड़का कौलेज में पढ़त रल फेल हो गइल । ओकरा पाँच रुपया रोज चाहीं - गांजा, भांग ... ताडी, दारू सब चलेला ओकरा ... टेरलिन के पाइन्ट आ कमीज चाहीं आ दिनभर अवारा लइकन का साथे रामपुर चट्टी पर बइठ के पान-सिगरेट उड़ावे के चाहीं। पाइन्ट का नीचा चमवटा लागल बड़का छूरा खोंसले रहेला। कुछ बोललीं त आँख तरेर के अइसन गुरराइला जइसे कच्चे चबा जाई ...।

छोटको के उहे हाल बा.... नाच का लौंडन का पीछे-पीछे कुत्ता अस लागल रहेला। घरे से अनाज चोरा के बेंच-बेंच के नचनियन के दे देला। .... हम का करी, खेत में कुछ होत नइखे ..... कभी - सुखार त कभी दहार। खाद-गोबर भी त पइसे से खरीदाला, हम पइसा कहाँ से ले आई। ...... ले चल हमरो के अपने साथे कुली कबारी के काम कके चार पइसा कमायब .... ई दुख अब सहात नइखे।

कुछ कह सुन के आ नोकरी खोजे के भरोसा दे के हम केइ गतिया सागर भइया के बिदा कइलीं। बहुत देर ले अकेले दुआर पर बइठल रहतीं। भीतर ओसारा में बाबू जी खटिया पर ओठंग के खोखत-खोखत निहाल भइल रहलन। कई बार मन में आइल कि बाबूजी का लगे जा के बइठीं, उनकर हाल-चाल पुछीं. भइया से कह के उनकरा खोंखी के कवनों दवाई बैद जी किहाँ से मंगवा दीं लेकिन मन कुछ अइसन उदास आ भरल भरल हो गइल रहे कि चुपचाप आंख मूँद के पड़ल रहलीं ।

ऊ लोग अपना-अपना घरे चल जाता बाकिर हम अबहुओं अपना के ओ लोग से अलग नइखीं हटा सकत। नहर किनारे गाँव के पढल लिखल नवहिन के बतकही ओ लोग का भीतर के निरासा आ असमर्थता आउर अबही अबही गाँव का पुरनका लोग का मुँह से सुनल सब बात बहुत देर ले मन में बॅवरेरा अस घूमत रहता। निरास ऊबल. असहाय आ खिसिआइल चेहरन का भीर में हम अपना के घेराइल अस बुझत बानी। सोचत बानी, ऊ लोग के दुख दरद आ हमार दुख दरद के कारण एक नइखे। एके नइखे बाकिर ऊ दुख दरद भोगला के छटपटाहट त

www.bhojpurisahityangan.com

जरूर एक नियर बा। पहिले नियर गाँव अब हमरा के अपना ओर खींचत नइखे .... बांधत नइखे आ ऊ लोग के शहर आपन बना नइखे पावत। केहू खातिर गांव नरक बा, एह में दम घूँटत बा आ शहर सपना के सरग बा जवना में जाए खातिर छछनत बा लोग तऽ केहू गाँव छूटला का फिकिर में शहर के हो नइखे पावत। लागत बा, सुविधा भोगेवाला आ सुविधा चाहे वाला दूनो पिआसले रही आ ओह पिआस के पीरा शहर के आ गाँव का बीच में हरदम एगो पक्का देवाल बनवले रहीं ।

लोटा में पानी लेवे खातिर आंगन में जात बानी। सँउसे आँगन जइसे अलकतरा से लिपाइल लागत बा अन्हार-धुप । रसोइघर का भीतर से ढिबरी के मधिम-मधिम अँजोर आ के ओसारा में खरहरे पटाइल बा। चौखट पर भइया बइठल बाड़न। हमरा उनकर पीठ ओ सिर पर बांधल ऊजर गमछा लउकत बा। भीतर भउजी रोटी बनावत होइहें, अनुमान से सोच लेत बानी। बातचीत क एगो छोट टुकड़ा हमरा कानमें पड़त बा "भइया हमरे बारे में भउजी से कुछ कहत बाड़े :

"गनेस ओइ का बारे में तहरा से कुछ पूछतरल ?

"कवना बारे में?' कड़ाही में कलछुल को चल एक पल खातिर रोक जाता। गरम तेल में जीरा आ पिआज के छोक के गंध सँउसे अंगना में छितरा जाता ।

"माई का गहनवा का बारे में?" भइया फुसफुसा के बोलत बाड़े। “ना...।“

“अगर छोटकू पूछस तऽ कह दिह कि माईजी का बेमारी आ काम किरिया में सब गहना बेंच के लाग गइल।”

एक घड़ी खातिर चुप्पी .... सब सन्नाटा।

'रउए कह देव हमरा से ई ना पार लागी ।" भउजी सकुचा के बोलत बाड़ी ।

"आ तू कह देबू त का होई .... बड़ा सत बादी हरिचन्दर बनल बाड़ी।" भइया का आबाज में दबल-घूटल विरोध आ उत्तेजना बा।

कुछ पल का बाद फेर भइये के बोली सुनाई देते बा - "उनकरा रिटायर भइला पर पिसिन मिली .... प्रोभिडेन्ड फंड के ढ़ेर रुपया मिली तऽ का हमरा तहरा के दीहें! ..... हम जानत नइखीं. तनीमनी रुपया घरे भेज देला आ सब रुपया अपना नाम से बैंक में जमा करेला। बूढ़ा-बूढ़ी के खर्चा हम चलाईं। ...... माई बाबू ओकरे पीठ पर बहत रल लोग .... ऊ त गइली नेकी-बदी क के, देखीं ई का करेले। .... हमरा डर बा कि माई का गहनवा वाली बात बुढ़ऊ जरूर छोटकू से कह के उसकइहन कि तोरा मेहरारू खातिर गहना बनल रल तवन माँग ले।

www.bhojpurisahityangan.com

.....ऊ गनेसे के नाम रटत-रटत मुअली आ दिन-रात गनेसे के माला जपेले ... गनेस के अतना छोह बा तऽ चल जास उनकरे साथ पटना .... खूब हलुआ पूरी चाभस। हमरा छाती पर काहे मूंग दरत बाड़े ... अन्न द, बस्तर द, खैनी तमाकू द आ उपर से उनकरा खाँय-खाँय के दवा-बिरो कराव ..... हमरा से ना पार लागी। ....

भइया के बोली के बोली सुन के हमरा कपार में चक्कर नियर उठे लागल। बुझाइल कि तलमला के गिर जाइब। आँगन में एक पल भी खाढ़ रहल हमरा खातिर कठिन होखे लागल | अपना कान से सुनला का बाद भी विसवास करेके हमार मन ना चाहे कि ई सब बात हमरा भइया का मुँह से निकसल ह। हम चुप-चाप गोड़ दबा के दरबाजा का ओर बढ़े लागत बानी जे में भइया हमरा के देख के समझस मत कि ई सब बात सुन ले होई। दू-चार डेग बढ़त-बढ़त भइया के आबाज फेनू हमरा कान में पड़त बा -"एही से त बुढ़ऊ कतना कहत रह गइले बाकिर हम माई के बेमारी के तार गनेसऊ का पास ना देलीं । .... माई ओकरा के काहे के बोलावे चाहत रहे हम खूब बूझत रहीं। आ ई बुढ़उ .... ईहो कम ना हऊएँ .... ए लोग का रग-रग के हम हाल जानीले .... आ तूंहूँ त ओकरे ....."

१६९

" .... अच्छा .... अब चुप हो जाई, कहीं बबुआ आवत होइहें त .... ।"

..... रउरा आँखिन में त दुनियाँ के सब लोग बेईमाने-छिनार बा। .... भउजी अनखा के बोलत बाड़ी ।

अब कुछुओ सुने आ बुझे के बाकी नइखे रह जात। अखड़ा में अच्छी तरे पिटाइल धुनाइल पहलवान नियर हम तलमलात थहरात बाहर आके ओसरा में चौकी पर थस दे बइठ जात बानी । बुझाता दरद से कपार फाट जाई ...... पिआस से कंठ सूखल जा रहल बा ।

थोड़ देर में भइया भीतर से निकलत बाड़े त हमरा के अकेले चुपचाप बइठल देख के नियरा आके सिर पर दुलार से हाथ फेर के कहत बाड़े ... "बबुआ तू अपना मन छोट काहे कइले रहत बाड़ ! एगो माइयेनु नइखे घर में आउर सभे त बड़ले बा .... हम बानी तहार भउजाई बाड़ी भतीजा भतीजी बा आ सबका उपर सब कुछ देखे करे वाला बाबूजी त अभी जीयते बानीं। तू तनको मन उदास मत कर - माई-बाप केहू के हरदम ना रहे। जा भीतर जाके खा .... पीअ ... तहार भउजाई साँझे से चाह बनाके तहार बाट जोहत बाड़ी कहाँ चल गइल रहल ह।"

हम भइया का चेहरा का ओर देखे के चाहत बानी लेकिन अँधरिया का ओजह से साफ-साफ दिखाई नइखे पड़त। भीतर-भीतर हमरा कुछ राहत मिलत बा कि भइया के ई बनावटी चेहरा हमरा ठीक से ना लउक सकल। हम कल्पना करतानी एह घड़ी उनकर चेहरा कइसन लागत होई। एतने देर में आपन आबाज केतना बदल लेले भइया .... आँगन में सुनल आवाज

www.bhojpurisahityangan.com

आ अभी-अभी के सुनल आवाज दूनो एके आदमी के कइसे हो सकेला! बाकिर ना, हो सकेला, सब कुछ हो सकेला ..... सब कुछ बदलल जा सकेला।

बाबूजी बगल में खरहरे खटिया पर एगो मइल चदर ओढ़ के सूतल बाड़न। हम उनकरा के आ भइया के सुना के कहत बानी - 'सोचत बानी काल्ह पटना चल जाई ... ।'

"...काहे, आजे तऽ अइलह... एतना जरूरी का बा ..... दू चार दिन रह के

जा .... गाय बियाइल बिया दही दूध खा ल त जइह! ...... " बाबूजी ना भइया बोलत बाड़न।

“रहे के त हमरो मन रहल बाकिर .... एह जा रह के का करब, कवनों काम भी त नइखे।"

कइसन बात करतबाड़ गनेस .... ! ई त आपन घर ह, सब केहू आपन बा इहाँ दू-चार दिन रहे में तहरा -- गजब तहार बुद्धि भइल जात बा।"

भइया अपना बात में अपनापन आ परेम दुलार के जे रंग घोरे के चाहत बाड़े ओह रंग से हमार दिल तनको नइखे रंगात। उनकर दुलार ऊपर-ऊपर छिहुल के दूर जाता ।

कुछ अउरो कह - बोले के चाहत बानी बाकिर बात भीतरे घुमड़ के रह जाता, मुँह से बाहर नइखे निकलत।

दोसरका दिन साँझ के चले का बेर जब बाबूजी के पैर छुए खातिर झुकत बानी त ऊ हहुआ के हमार दुनों हाथ ध लेत बाड़े। आँखिन से टप-टप लोर जुए लागत बा ... “हमरो के अपना साथे ले-ले चल गनेस - हमरा से अब इहां .... ।" बा." उनकर गला भर आवत बा आ हमार दूनू हाथ भर काबू धइले ऊ बकर-बकर हमार मुँह पर ताके लागत बाड़े।

"हँ गनेस, बाबू जी बहुत दिन से एक बेर पटना सहर देख आवे के कहत बाड़न...लेले जा अबकी तनी देख सुन लेस .... ।” भइया देवाल का ओर मुँह फेर के बोलत बाड़े।

हम बाबूजी का चेहरा पर धियान से देखत बानी .... उहाँ गजब तरे के एगो डर, आतंक, घिरना, किरोध, दया आ असुरक्षा के मिलल-जुलल भाव दिखाई पड़त बा।

लागत बा उनकरा आँखिन में मृत्यु के डर बिनती बन के ठहर गइल बा। “हम बाबूजी अपना साथे ले जाइब।" हमरा मुँह से अपने आप निकल पड़त बा। भइया हमरा ओर अविसवास से देखत बाडन बाकिर उनकरा आँखिन में खुशी के चमक बा। “ .... जइसन ठीक समझ।" बोल के एक ओर चल देत बाड़े।

www.bhojpurisahityangan.com

टीसन जाए खातिर बैलगाड़ी पर बाबूजी के पाँखुर में हाथ लगा के चढ़ावत बानी त ऊ मेला जाये के तइयार लइकन नियर मुसकरा के हमरा ओर देखत बाड़न ।

१७१

गाड़ी हंकाये लागत बा त ऊ घर-दुआर आ नाद पर बांधल बयलन का ओर देख के मुड़ी नीचा क के आँख मूंद लेत बाड़न। उनकरा मूँदल आँखिन से टप-टप कई ठोप लोर गिर के नीचे धूरा में मिल जाता। गाड़ी गते-गते बढ़ल जा रहल बा आ ऊ गांव का एक-एक खेत, घर, गाछ पोखरा आ मंदिर का ओर देख-देख के चुपके-चुपके हाथ जोड़ देत बाड़न । अब उनकरा चेहरा पर ना त पहिले वाला डर आ आतंक बा, ना असुरक्षा के भाव, अगर बा त एगो गजब तरे के करुना. ममता आ संतोख के मिलल-जुलल भाव। बाकिर बैलगाड़ी पर उनकरा बगल में बइठल-बइठल हमरा इहे बुझाता कि हम अपना साथे आज गांव के लाश सहर ले जा रहल बानी ... गांव के मुरदा ।

~~~~~~~

सहजोग : धनंजय कुमार

एम.ए. (भोजपुरी साहित्य)

सत्र : 2023-25

बाबा साहेब भीमराव अम्बेदकर यूनिवर्सिटी, मुजफ्फरपुर

www.bhojpurisahityangan.com
~~~~~~~